रणनीतिक संचार संदर्भ सामग्री - भाग 2

केस अध्ययन - सूत्र और स्वरूप

VIKAS SAMVAD

लेखन
सचिन कुमार जैन

सह लेखन और संपादन
पूजा सिंह, राकेश कुमार मालवीय, विश्वंभर त्रिपाठी,
संदीप नाईक, निधि तिवारी, जावेद अनीस, राजेश भदौरिया,
सत्यम पांडेय, उपासना बेहार, अनिल धीमान,
कार्तिक शर्मा, पिंकी वर्मा

मार्गदर्शन
चिन्मय मिश्र, गुरुशरण सचदेव

किसी केस अध्ययन का अर्थ है किसी व्यक्ति, व्यक्तियों के समूह या समुदाय का गहन अध्ययन।

यह एक व्यवस्थित अध्ययन होता है जहां शोधकर्ता को यह स्पष्ट रूप से पता रहता है कि वह किस पर शोध कर रहा है तथा किसके लिए कर रहा है। तथ्यों और जानकारियों का केस अध्ययन में बहुत महत्व होता है। आंकड़े इसे आधार प्रदान करते हैं। केस अध्ययन मुख्य रूप से तीन तत्वों से तैयार होता है प्रमाण यानी तथ्य, जानकारियां और लक्षित समुदाय के लोगों के वक्तव्य।

एक अच्छे केस अध्ययन के लिए पहले सात–आठ पंक्तियों में संक्षेप में पूरे मामले का सार निष्कर्ष के साथ प्रस्तुत करें। अपने विचारों को रखने के बजाय तथ्यों और जानकारियों के साथ केस अध्ययन को आगे बढ़ाएं। केस अध्ययन को इस प्रकार लिखा जाए कि पढ़ने वाले की रुचि उसमें निरंतर बनी रहे। केस अध्ययन के दौरान की गई पहल की शुरुआत, उसकी प्रेरणा और आखिर में उससे हासिल परिणाम के बारे में लिखें। केस अध्ययन में पहले और बाद की स्थिति का तुलनात्मक विश्लेषण भी प्रस्तुत करें जिससे पढ़ने वालों को सटीक ढंग से यह समझ में आएगा कि वास्तव में जिस समुदाय में काम किया गया, वहां क्या परिवर्तन आया है।

केस अध्ययन - सूत्र और स्वरूप

केस अध्ययन कैसे बनाएं?

सूत्र और स्वरुप

केस अध्ययन क्या है? – केस अध्ययन यानी किसी विषय, समस्या, स्थिति, समाधान या व्यक्ति/संस्था के बारे में तथ्यात्मक–गुणात्मक अभिव्यक्ति; इसका एक ढांचा होता है और लेखक/प्रस्तुतकर्ता को यह स्पष्ट होना चाहिए कि वह किसके लिए केस अध्ययन प्रस्तुत कर रहा है। केस अध्ययन किसी विषय के बारे में उत्तर देता है – समस्या/विषय क्या है? क्यों है? कौन है? कहाँ है? उसके प्रभाव क्या हैं? कब से? समस्या हल कैसे हुई? व्यक्ति क्या कहते हैं? तथ्य क्या हैं?

प्रारूप का उद्देश्य – केस अध्ययन के इस प्रारूप का उद्देश्य सामाजिक नागरिक संस्थाओं के सामुदायिक कार्यकर्ताओं को केस अध्ययन तैयार करने में सहयोग करना है। इसके माध्यम से वे अपने विषय/कार्यक्रम से जुड़े किसी खास पहलू या व्यावहारिक अनुभव या उपलब्धि को तथ्यात्मक ढंग से प्रस्तुत कर पाएंगे।

पहला सिद्धांत – केस अध्ययन लिखने/प्रस्तुत करने के लिए अपनी बात कहने/लिखने की इच्छा होना सबसे बड़ी जरूरत है। यदि सामुदायिक कार्यकर्ताओं/ शोधकर्ता में अपने अनुभवों, प्रयोगों, चुनौतियों और उपलब्धियों को निष्पक्षता के साथ कहने या बताने की इच्छा ही नहीं हो, तो केस अध्ययन तैयार नहीं किए जा सकते हैं।

दूसरा सिद्धांत – केस अध्ययन लिखने/प्रस्तुत करने की इच्छा के साथ ही केस अध्ययन तैयार करने का अभ्यास करने की मंशा होना। अगर हम यह मानते हैं कि कोई केस अध्ययन मांगेगा या जब किसी खास उद्देश्य के लिए इसकी जरूरत होगी, तभी केस अध्ययन तैयार करेंगे, तब केस अध्ययन तैयार करना बेमानी सा ही होगा।

तीसरा सिद्धांत – प्रमाणों का होना। तथ्यों/आंकड़ों/प्रभावित व्यक्तियों के वक्तव्य या बयानों को जरूर शामिल करें। इनसे ही केस अध्ययन में विश्वसनीयता आती है। केस अध्ययन में कम से कम एक चौथाई हिस्सा प्रमाणों/तथ्यों/वक्तव्यों को ही दिया जाना चाहिए।

चौथा सिद्धांत – अपने विषय से जुड़े आयामों और पहलुओं को समझना। मसलन कुपोषण की समस्या के कारणों में बच्चों को भोजन का उपलब्ध न होना एक कारण है, तो वहीं, परिवार के पास रोजगार न होना, जातिगत और लैंगिक भेदभाव होना और शासकीय योजनाओं का खराब क्रियान्वयन भी। देखिए कि आपके अध्ययन में विविध आयाम शामिल हैं या नहीं?

पांचवा सिद्धांत – शुरू में ही यह तय करना होगा कि यह केस अध्ययन आपकी व्यक्तिगत प्रस्तुति है या सांगठनिक / संस्थागत प्रस्तुति है। जब हम संस्था / संगठन की तरफ से प्रस्तुति करेंगे तो यह ध्यान रखिए कि केस अध्ययन में संस्था / संगठन / पहल के नाम से प्रस्तुति हो।

छठा सिद्धांत – क्या यह स्पष्ट है कि आप किस भूमिका में केस अध्ययन लिख रहे हैं? एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में, एक शोधकर्ता के रूप में, समुदाय के सदस्य के रूप में, एक लेखक के रूप में या किसी अन्य रूप में?

सातवां सिद्धांत – यह जरूर जाँचिए कि आप जो बात लिख/प्रस्तुत कर रहे हैं, वह आपका नजरिया या विचार है या वास्तविक स्थिति यही है? कोशिश यह हो कि वे वास्तविक स्थिति को ही प्रस्तुत करें।

आठवां सिद्धांत – सचेत रहना होगा कि केस अध्ययन प्रस्तुत करते समय हम अपने पूर्वाग्रहों को बहुत महत्व न दें।

नवां सिद्धांत – केस अध्ययन से सम्बंधित ऐसे फोटोग्राफ्स/वीडियो साथ में लगाएं, जो आपकी बात की पुष्टि भी करते हों।

दसवां सिद्धांत – जिस भाषा में भी लिखें या प्रस्तुत करें, उस भाषा का सम्मान करें। भाषा की गलतियाँ अर्थ का अनर्थ भी कर सकती हैं। इसके लिए विषय के बारे में पढ़ना–अध्ययन करना जरूरी है और समुदाय की भाषा को पढ़ना भी।

ग्यारहवां सिद्धांत – केस अध्ययन की प्रभावी प्रस्तुति के लिए जरूरी है अच्छे फोटो होना। हम जिस विषय पर केस अध्ययन प्रस्तुत कर रहे हैं, फोटो उस विषय से ही सम्बंधित होना चाहिए। यह देखना जरूरी है कि फोटो धुंधले या कम रोशनी वाले या बहुत दूर से ऐसे न खींचे गये हों कि कुछ समझ ही न पड़े। बच्चों, महिलाओं और उपेक्षित तबकों के फोटो प्रस्तुत करते समय उनकी निजता, गरिमा और नियमों का ध्यान रखना जरूरी है। यह देखिए कि फोटो में आप क्या दिखाना चाहते हैं और वास्तव में वह दिख रहा है या नहीं?

बारहवां सिद्धांत – क्या आपको पता है कि जिस विषय पर आप केस अध्ययन लिखना चाह रहे हैं, उससे सम्बंधित प्रामाणिक और तथ्यात्मक जानकारी कौन दे सकता है? क्यों दे सकता है? यह तय करना कि सूचना/तथ्यों के स्रोत कौन/क्या/क्यों होंगे?

पूर्व तैयारी

- क्या आपको पता है कि आप क्या बताना चाहते हैं? (जो बताना चाहते हैं, वह खुद को 2 वाक्यों में बताइए।)
- क्या अपनी पहल/कार्यक्रम, उसके व्यापक उद्देश्यों और रणनीतियों को अच्छे से समझते हैं? अगर आप केवल गतिविधियों के बारे में बताना चाहते हैं, तो रुक जाइए; आप अभी केस अध्ययन की प्रस्तुति के लिए तैयार नहीं हैं!
- किसी भी व्यक्ति/संस्था को आपकी बात में क्यों रूचि होना चाहिए?(स्वयं तय कीजिए।)
- आप जो बताने वाले हैं, उसमें मुख्य विषय वस्तु क्या है – ❖ आप समस्या बताना चाहते हैं ❖ आप समाधान बताना चाहते हैं ❖ आप प्रयोग और उसकी उपलब्धि बताना चाहते हैं ❖ आप व्यक्ति/संस्था का परिचय देना चाहते हैं।
- क्या आपने केस अध्ययन को विश्वसनीय बनाने के लिए आवश्यक तथ्य / प्रमाण / प्रभावित समुदाय के वक्तव्य इकट्ठा कर लिए हैं?

मैदानी तथ्य/ जानकारियां/आंकड़े कैसे इकट्ठे करें?

केस अध्ययन के लिए तथ्य/जानकारियां/आंकड़े बहुत जरूरी होते हैं। मान लीजिए कि आप खाद्य सुरक्षा और पोषण के विषय पर काम कर रहे हैं।

क्या हमारे पास ये जानकारियां हैं? – गाँव/कार्यक्रम क्षेत्र में छः वर्ष तक के कितने बच्चे हैं? कितने बच्चे अल्पपोषित हैं? उन परिवारों में रोजगार, पेयजल और स्वास्थ्य की क्या स्थिति है? कहीं बाल विवाह तो नहीं हुआ? क्या उन पर कर्ज है? गर्भवती और धात्री महिलाओं का भोजन क्या है? आदि।

ये जानकारियां आप स्वयं सर्वे करके जुटा सकते हैं? आंगनवाड़ी केंद्र और पंचायत से ले सकते हैं। समूह से चर्चा करें। परिवार से जानकारी जरूर लें। बहुत जरूरी है कि हमारे पास स्पष्ट सवाल और जिज्ञासाएं हों। यह बिलकुल साफ होना चाहिए कि हमें क्या जानना है? हमें यह पता करना होगा कि सरकार का कौन सा विभाग इस सम्बंध में जानकारियां रखता है और वहां से जानकारियां लेने की कोशिश की जाना चाहिए। यह जरूर याद रखिए कि हमें नवीनतम तथ्य और आंकड़े उपयोग में लाना चाहिए। याद रखें, कोई भी बेहतर केस स्टडी बिना फील्ड वर्क के तैयार नहीं हो सकती।

केस अध्ययन का स्वरूप

संक्षेपिका

- सबसे पहले 7–8 पंक्तियों में आप अपनी कहानी/केस अध्ययन का सार लिख लें।
- यह देखिए कि आपने जो सार लिखा है, उसमें तथ्य/आंकड़े हैं या नहीं? संक्षेपिका में 2 या 3 से अधिक आँकड़े नहीं होना चाहिए।
- यह भी देखिए कि क्या इस संक्षेपिका में वह निष्कर्ष शामिल हो गए हैं, जो आप केस अध्ययन के माध्यम से बताना चाहते हैं?

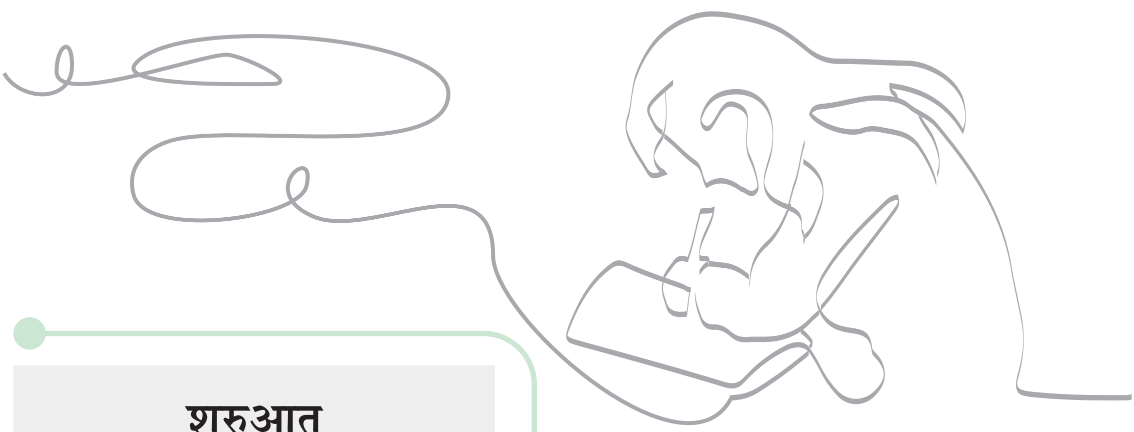

शुरुआत

- किसी सीख या विशेष उपलब्धि के वाक्य से केस अध्ययन की शुरुआत करें। यह वाक्य ऐसा हो, जिससे पढ़ने वाले व्यक्ति में केस अध्ययन को आगे पढ़ने की रूचि जागृत हो।
- आप जिस विषय/कार्यक्रम/बदलाव की कहानी बताने जा रहे हैं, उसका विवरण/पृष्ठभूमि दें। (समस्या/विषय का उल्लेख किया जाए, जिसमें तथ्य और प्रमाण शामिल हों।)(7–8 वाक्य/बिंदु)

विवरण

- आपको इस पहल की प्रेरणा कैसे मिली? (2-3 वाक्य/बिंदु)
- आपकी पहल/कोशिश की शुरुआत कैसे हुई? (4-5 वाक्य/बिंदु)
- मुख्य रणनीतियों का उल्लेख (5-6 वाक्य/ बिंदु)
- आपकी पहल/कार्यक्रम/कोशिश की प्रक्रिया क्या रही? इसमें लेखक/प्रस्तुतकर्ता अपने निजी विचारों या आग्रह को महत्व न दे, बल्कि जो लोग इस पहल/कार्यक्रम से जुड़े रहें, उनके वक्तव्यों को ज्यादा स्थान दें। इसके साथ ही तथ्यों का भी उल्लेख करें। यदि आपका विषय किसी अन्य विषय से सीधा जुड़ाव रखता है, तो उस जुड़ाव का भी उल्लेख यहीं करें। (14-15 वाक्य/बिंदु)
- आपकी पहल/कोशिश में किस तरह की चुनौतियां आईं? और उनका सामना आपने कैसे किया? सहयोगी परिस्थितियां/व्यक्ति कौन से रहे और असहयोगी कौन? (6-7 वाक्य/बिंदु)

सीखें, उपलब्धियां और परिणाम

- इस पहल/कोशिश में आपकी मुख्य सीखें क्या रहीं? यह पूर्व से प्रचलित कोशिशों से भिन्न कैसे है? (5-6 वाक्य/बिंदु)
- पहल/कोशिश का परिणाम क्या रहा? तथ्यों/आंकड़ों/वक्तव्यों के साथ। इस स्तर पर उन्हें यह बताना होगा कि बदलाव क्या आया? (6-7 वाक्य/बिंदु)
- जब हम अपनी पहल/कार्यक्रम के कारण आए बदलाव को प्रस्तुत करेंगे, तब पूर्व की स्थिति और बाद की स्थिति की तथ्यों/आंकड़ों से साथ तुलना को प्रस्तुत करें। तभी बदलाव स्थापित किया जा सकता है।

केस अध्ययन को स्वयं परखें

- अपने द्वारा तैयार किए गये केस अध्ययन को एक पाठक के रूप में पढ़ें। इसे पढ़कर आप कैसा महसूस कर रहे हैं?
- जो बात आप कहना / बताना चाहते हैं, वह स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही है। आप क्या नया बता रहे हैं?
- भाषागत और तथ्यात्मक विसंगतियां या गलतियाँ तो नहीं हैं।
- इसमें प्रमाण / तथ्य / वक्तव्य शामिल हैं। केस अध्ययन में सीखें और परिणाम दर्ज हैं।